राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग की भूमिका

* डॉ. महेन्द्र कुमार सुनार
** डॉ. एम.एल. सैनी

प्रस्तावना :

2राजस्थान एक रंग–रंगीला राज्य माना जाता है, राजस्थानी प्यार से अपने राज्य को सुरंगा राजस्थान कहना पसंद करते हैं। आधुनिक उद्योगों की भांति पर्यटन भी राजस्थान में एक उद्योग के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुका है। राजस्थान सरकार के पर्यटन विभाग ने देश–विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए 'पधारो म्हारे देश' का आकर्षक नारा दिया गया है। राज्य में पर्यटन के विकास के लिए सरकार भी दृढ़ संकल्प है क्योंकि राजस्थान में पर्यटन उद्योग ऐसा उद्योग है जो बिना पूंजी निवेश प्रदूषण रहित उद्योग है जिससे राज्य को करोड़ों रूपये की विदेशी मुद्रा अर्जन होती है। ऐसा माना जाता है, कि भारत में आने वाला प्रत्येक तीसरा विदेशी पर्यटक राजस्थान में भ्रमण के लिए अवश्य आता है। पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान देश के अग्रणी राज्यों में से एक है। राजस्थान इतिहास, सौन्दर्य एवं त्याग की त्रिवेणी है। यहाँ के पग–पग पर वीरों ने जन्म लिया है। इस पावन भूमि पर कई वीर सपूतों ने अपनी मृत्यु के बाद भी, अपने कर्म और यश की छाप इस प्रकार से छोड़ी है कि आने वाली पीढ़ियों को सदियों–सदियों तक देश सेवा एवं स्वाभिमान की प्रेरणा मिलती रहेगी। आज विश्व के पर्यटन मानचित्र में राजस्थान के कई क्षेत्र सम्मिलित हैं, इसी कारण से राजस्थान सैलानियों का स्वर्ग कहलाने लगा है। प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता कर्नल 'जैम्स टॉड' ने अपनी पुस्तक 'ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इंडिया' में राजस्थान को अत्यधिक रसमय व मन्त्रमुग्ध करने वाला प्रदेश बताया था। पर्यटन सम्पूर्ण राजस्थान की मिट्टी के कण–कण में रचा बसा है। 'अतिथि देवो भव', 'पधारो म्हारे देश', रंगीलो राजस्थान, केसरिया बालम पधारो म्हारे देश आदि शब्दों का राजस्थान की वीरभोग्या, तपो धरती में विशेष महत्व रहा है। राजस्थान में पर्यटन विकास के लिए 1956 में पर्यटन विभाग की स्थापना की गई। राजस्थान के पर्यटन विकास निगम ने वर्तमान में राजस्थान पर्यटन के लिए नया लोगो 'अतुल्य राजस्थान' जारी किया है।

राजस्थान के प्राचीन समय से ही अतिथि को देवस्वरूप मानकर उनका आदर व सम्मान किया जाता था। यहाँ की इसी परम्परा से आकर्षित होकर देशी–विदेशी पर्यटक यहाँ आते रहते हैं। जिनमें से कर्नल जेम्स टॉड, जार्ज थामस, फाह्यान, हवेंसांग, लाला तारानाथ आदि प्रमुख रहे हैं। वर्तमान में भी अनेक देशी–विदेशी राजनेता, समाजसेवक अन्य प्रशासनिक अधिकारी भी यहाँ की परम्परा एवं संस्कृति से आकर्षित होकर खिंचे चले आते हैं, राजस्थान अपने गौरवपूर्ण अतीत, शौर्य, इतिहास, त्याग व बलिदान, विशिष्ट संस्कृति, लोक नृत्य व लोक संगीत, प्राकृतिक सुषमा, उच्च श्रेणी की शिल्पकला से परिपूर्ण महल, हवेलियाँ, मन्दिर, वन्यजीव अभ्यारण रंग बिरंगे मेलों व त्यौहारों की चहल–पहल व रौनक तथा घने जंगल आदि के कारण देशी एवं विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। यहाँ के प्रमुख शहर जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, अजमेर, जैसलमेर, बीकानेर आदि अपनी–अपनी ऐतिहासिक परम्पराओं व कलाओं के लिए विश्व में जाने जाते हैं। जयपुर (गुलाबी नगरी भारत का पैरिस) का सिटी पैलेस, चन्द्रमहल हवामहल, नाहरगढ़ का किला, आमेर का किला, रामबाग पैलेस, जंतरमंतर (वेधशाला), म्यूजियम प्रसिद्ध है। जयपुर के पास कनक वृन्दावन, जलमहल, आमेर व सिसोदिया रानी का बाग दर्शनीय व रमणीय स्थल हैं इसी के साथ गलता जी एक प्रमुख तीर्थस्थल के रूप में विख्यात है। जयपुर जवाहरात उद्योग में ऐशिया की सबसे बड़ी व्यापारिक मंडी के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ अनेक देशों के व्यापारी जवाहरात व्यापार के लिए आते हैं। अजमेर में ख्वाजा मोइउद्दीन चिश्ती की दरगाह धार्मिक स्थल के रूप में सारे संसार में प्रसिद्ध है एवं पुष्कर जी एक तीर्थस्थल के रूप से विख्यात है। जोधपुर एक ऐतिहासिक नगर है जो मोतीमहल, फूलमहल, मानमहल, सिलहरवान, जसवंत थड़ा एवं अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए विख्यात है। झीलों की नगरी उदयपुर अपनी झीलों, फव्वारों महलों के लिए विख्यात है। सहेलियों की बाड़ी, स्मारक उदयपुर से 48 किमी दूर जयसमंद कृत्रिम झील तथा रणकपुर के जैन मंदिर प्रसिद्ध हैं। माऊंट आबू में एक हजार वर्ष पुराने देलवाड़ा के

जैन मंदिर उच्च श्रेणी के मार्बल से बने हैं, जो अपनी कारीगरी शिल्पकला के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। जैसलमेर, बीकानेर, चित्तौड़गढ़, मण्डावा आदि अपने किलों, महलों, हवेलियों की बनावट व चित्रकारी मीनाकारी के लिए प्रसिद्ध है। ऊँचे–ऊँचे रेत के टीलों धारों को देखने के लिए पश्चिमी राजस्थान में प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में देशी–विदेशी पर्यटक भ्रमण व रात्रि विश्राम के लिए आते हैं एवं हॉलीवुड बॉलीवुड के फिल्म निर्माता निर्देशक अपनी फिल्मों की शूटिंग के लिए आते हैं। भरतपुर का केवलादेव अभ्यारण सइबेरिया के सारसों के प्रजनन एवं प्रवास के लिए आते हैं इसी प्रकार अलवर के सरिस्का टाइगर प्रोजेक्ट एवं सवाईमोधोपुर में रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान (टाइगर रिजर्व फॉरेस्ट) बाघों के लिए प्रसिद्ध है। जहाँ प्रतिवर्ष लाखों पर्यटक बाघों को देखने के लिए आते हैं। यहाँ के मेले, त्यौहार आदि पर जो उत्सव, नृत्य व संगीत के कार्यक्रम होते हैं उनको देखकर भी विदेशी पर्यटक आकर्षित होते हैं। जैसलमेर का मरु मेला, पुष्कर (अजमेर) का पशु मेला, जयपुर का तीज व गणगौर मेले भी विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

राज्य में पर्यटन उद्योग से आमोद–प्रमोद, मनोरंजन एवं भ्रमण आदि उद्देश्य ही पूर्ण नहीं होते अपितु यह उद्योग विदेशी मुद्रा का अर्जन करने, रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने, उद्योग एवं शिक्षण स्वास्थ्य संस्कृति के आदान–प्रदान करने का माध्यम है। पर्यटन उद्योग से निम्नलिखित लाभ हैं – विदेशी मुद्रा का अर्जन होता है। वर्तमान में लगभग 170 लाख पर्यटक राजस्थान भ्रमण के लिए आते हैं जिसमें से 10 लाख पर्यटक विदेशी होते हैं। एक सर्वे के अनुसार देखा जाये तो एक विदेशी पर्यटक भ्रमण पर जहाँ 1000 रूपये खर्च करता है वहाँ देशी पर्यटक 300 से 400 रूपये व्यय करता है। इस प्रकार पर्यटन उद्योग से राज्य को वर्तमान में अरबों रूपयों की आय होती है। पर्यटन से देशी–विदेशी संस्कृति का आदान प्रदान होता है। जिससे भावानात्मक, सामाजिक और सांस्कृतिक संबंध मजबूत होते हैं। अतः पर्यटन हमारे सांस्कृतिक वैभव, कलात्मक धरोहर तथा नैसर्गिक दृश्यों के रख रखाव का साधन भी है। पर्यटन द्वारा पर्यटक विभिन्न राज्यों की संस्कृति, स्थानीय भाषाओं, संगीत साहित्य एवं लोक जीवन से परिचित होते हैं एवं उनका अन्य राज्यों में प्रचार–प्रसार होता है। जिससे राज्य की संस्कृति का विकास एवं प्रचार को बल मिलता है। राजस्थान में पर्यटन के विकास के कारण प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अवसर बढ़ते हैं। पर्यटन से होटल, धर्मशालाओं, ट्रेवल्स एजेंसियों एवं हस्तशिल्प कलाओं से जुड़े लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार मिलता है, जबकि अप्रत्यक्ष रूप से पर्यटन विकास के लिए सड़कों के निर्माण, पर्यटन स्थलों के रख–रखाव से लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। यह उद्योग प्रदूषण रहित, कम निवेश वाला एवं अधिक लाभ देने वाला उद्योग है। पर्यटन से अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार में भी वृद्धि होती है तथा आधारभूत सुविधाओं का विकास भी होता है।

18 सितम्बर 2015 को राजस्थान को राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के द्वारा दिया गया। यह राष्ट्रीय पुरस्कार हमारे राज्य के लिए एक बड़ा अचीवमेंट है। राज्य सरकार द्वारा पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 1956 में एक स्वतंत्र पर्यटन विभाग बनाया गया। 1 अप्रेल 1979 को राजस्थान राज्य पर्यटन विकास निगम लिमिटेड संस्था की स्थापना की गई। 29 अक्टूबर 1996 को राजस्थान इन्स्टीट्यूट ऑफ ट्यूरिज्म एण्ड ट्रेवल मैनेजमेंट (RITTMAN) की स्थापना की गई। 17 जनवरी 2000 को राज्य पर्यटन सलाहकार मण्डल का गठन किया। पर्यटन उद्योग के विकास को ध्यान में रखते हुए राजस्थान को पर्यटन की दृष्टि से 10 मण्डलों में विभाजित किया गया। इन मण्डलों में ढूंढाड सर्किट, मेवात सर्किट, रणथम्भौर सर्किट, हड़ौती सर्किट, मरु त्रिकोण सर्किट (डेजर्ट ट्रायंगल), शेखावाटी सर्किट मेरवाड़ा सर्किट, माऊण्ट आबू सर्किट, वागड सर्किट, मेवाड़ सर्किट आदि है। पर्यटकों की सुरक्षा हेतु पर्यटन सहायता दल या पर्यटन पुलिस तैनात करने वाला राजस्थान भारत का प्रथम राज्य है। 2009 में ग्रामीण पर्यटन विकास को बढ़ावा देने के लिए एक योजना आरम्भ की गई। भारत सरकार के द्वारा दिल्ली–आगरा–जयपुर को स्वर्णिम त्रिकोण के रूप में पर्यटन को जोड़ा गया इसी क्रम में राज्य में शाही रेलगाड़ी (Palace of Wheels), रायल राजस्थान ऑन व्हील्स, फेरी क्वीन इत्यादि रेलगाडियाँ चलायी गयी। राजस्थान में पर्यटकों को आकर्षिक करने के क्रम में राजस्थान में पहले देश के चौथे हैंगिक ब्रिज (झूलता पुल) का निर्माण कोटा में चम्बल नदी पर बनाया जा रहा है। कई स्थानों पर रोप वे बनाये जा रहे हैं। राजस्थान में 2015 में नई पर्यटन नीति भी बनायी गई जो आने वाले समय में पर्यटकों की संख्या में ओर भी अधिक इजाफा करने में मददगार साबित होगी। कहा जाता है, पर्यटक शान्ति के पासपोर्ट होते हैं।

विभागाध्यक्ष, EAFM विभाग
विभागाध्यक्ष, लोकप्रशासन विभाग
अग्रवाल पी.जी. कॉलेज, जयपुर